UGC NET Paper= 2.. Sanskrit

Filler Form

YouTube

UNIT=4

Daily = 6 pm

Class-39

🎯JRF का जलवा 🔥 🏆

दर्शन - साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

8209837844 www.ugc-net.com

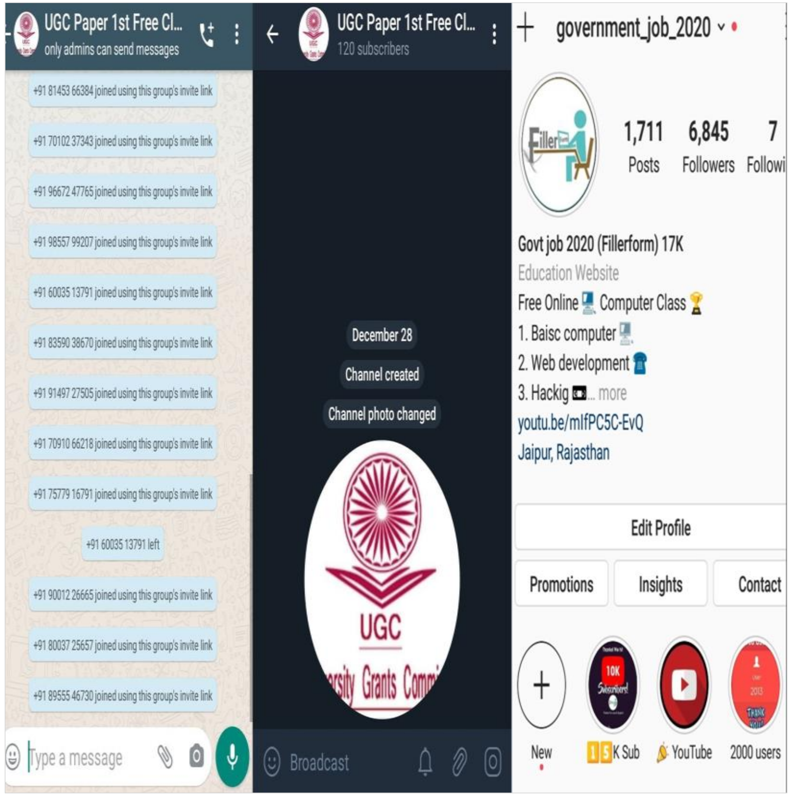

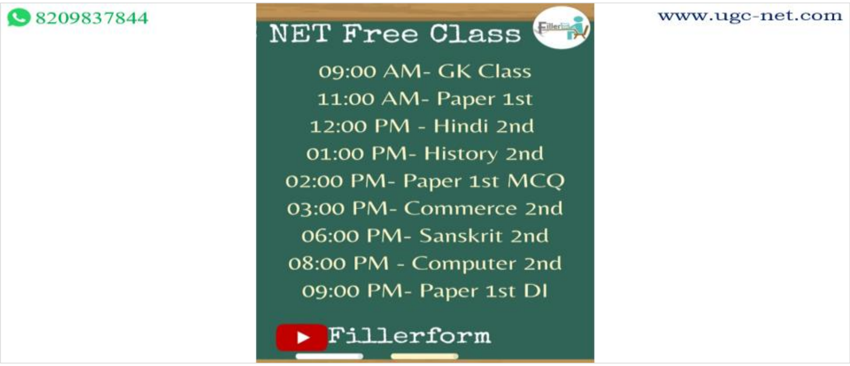

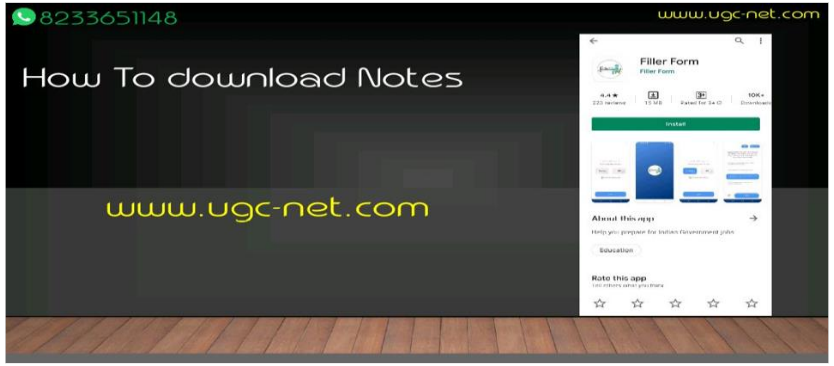

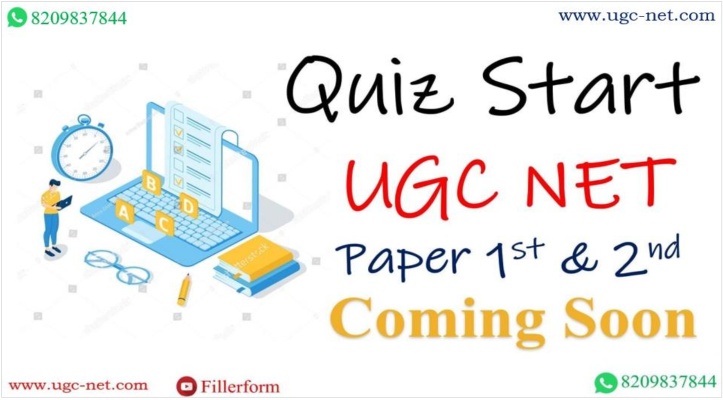

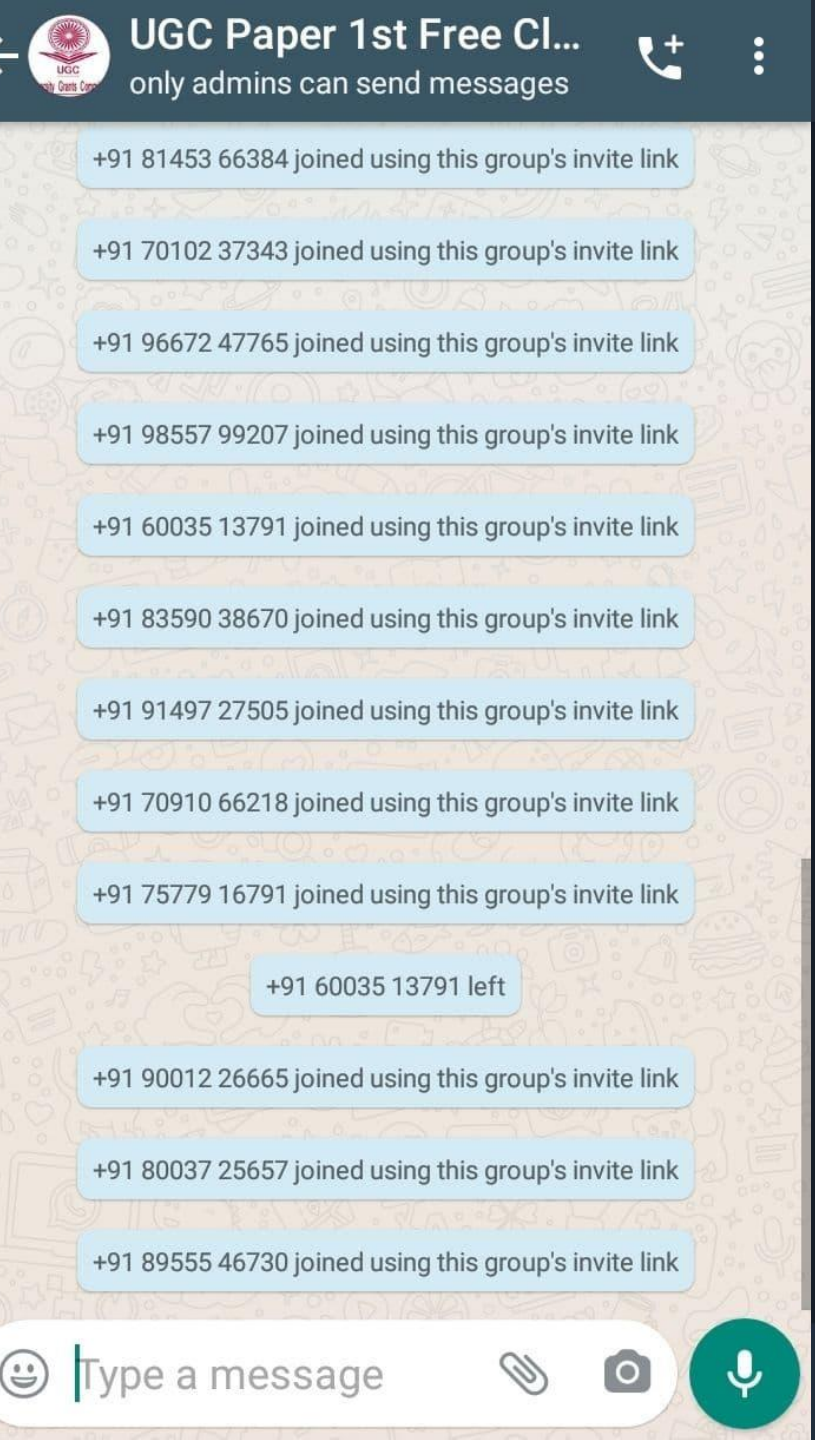
UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages
+91 81453 66384 joined using this group's invite link
+91 70102 37343 joined using this group's invite link
+91 96672 47765 joined using this group's invite link
+91 98557 99207 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 joined using this group's invite link
+91 83590 38670 joined using this group's invite link
+91 91497 27505 joined using this group's invite link
+91 70910 66218 joined using this group's invite link
+91 75779 16791 joined using this group's invite link
+91 60035 13791 left
+91 90012 26665 joined using this group's invite link
+91 80037 25657 joined using this group's invite link
+91 89555 46730 joined using this group's invite link
Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers
December 28
Channel created
Channel photo changed
UGC
Broadcast

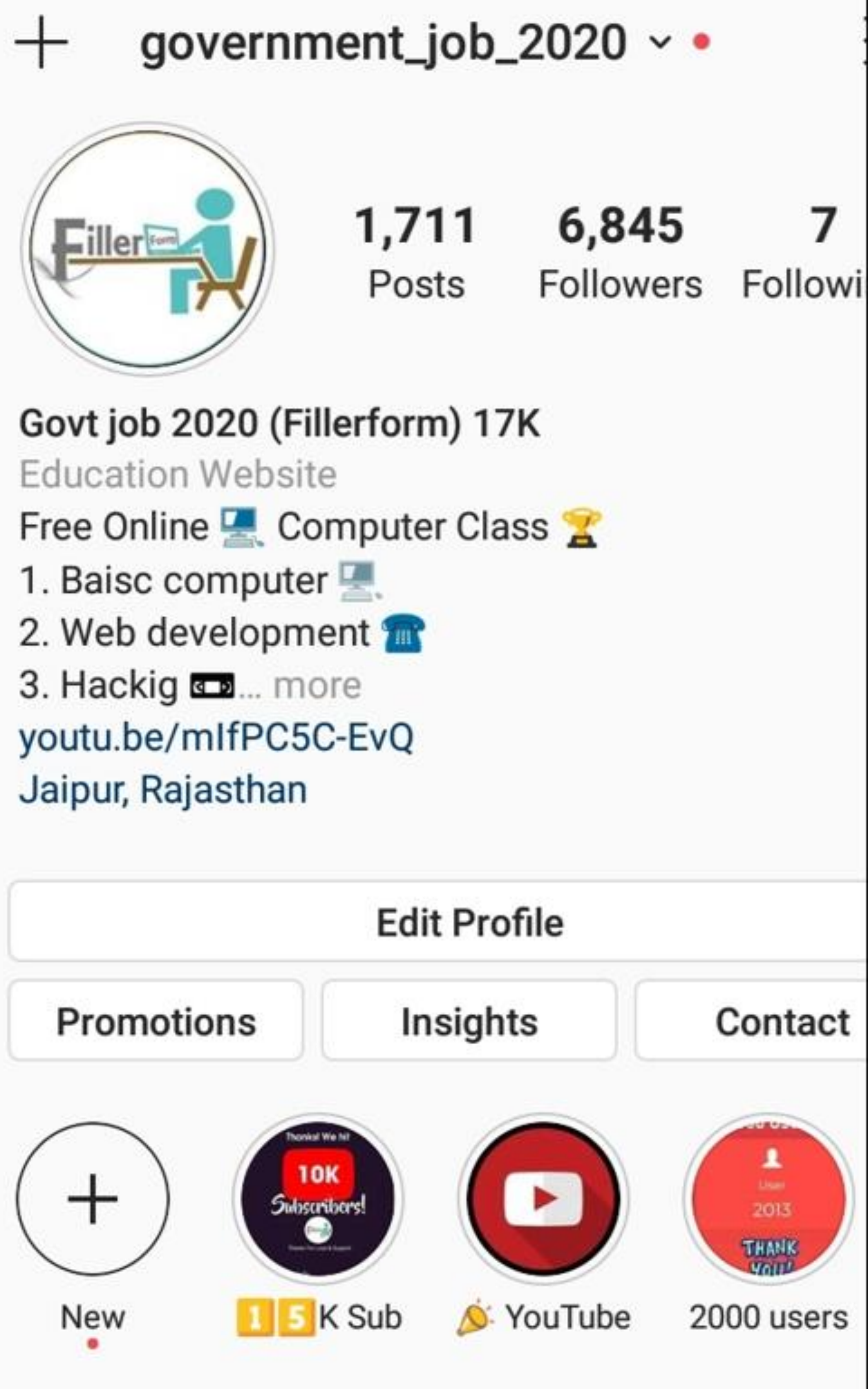
government_job_2020
1,711
Posts
6,845
Followers
7
Followi
Govt job 2020 (Fillerform) 17K
Education Website
Free Online Computer Class
1. Baisc computer
2. Web development
3. Hackig ... more
youtu.be/mIfPC5C-EvQ
Jaipur, Rajasthan
Edit Profile
Promotions
Insights
Contact
New
15K Sub
YouTube
2000 users

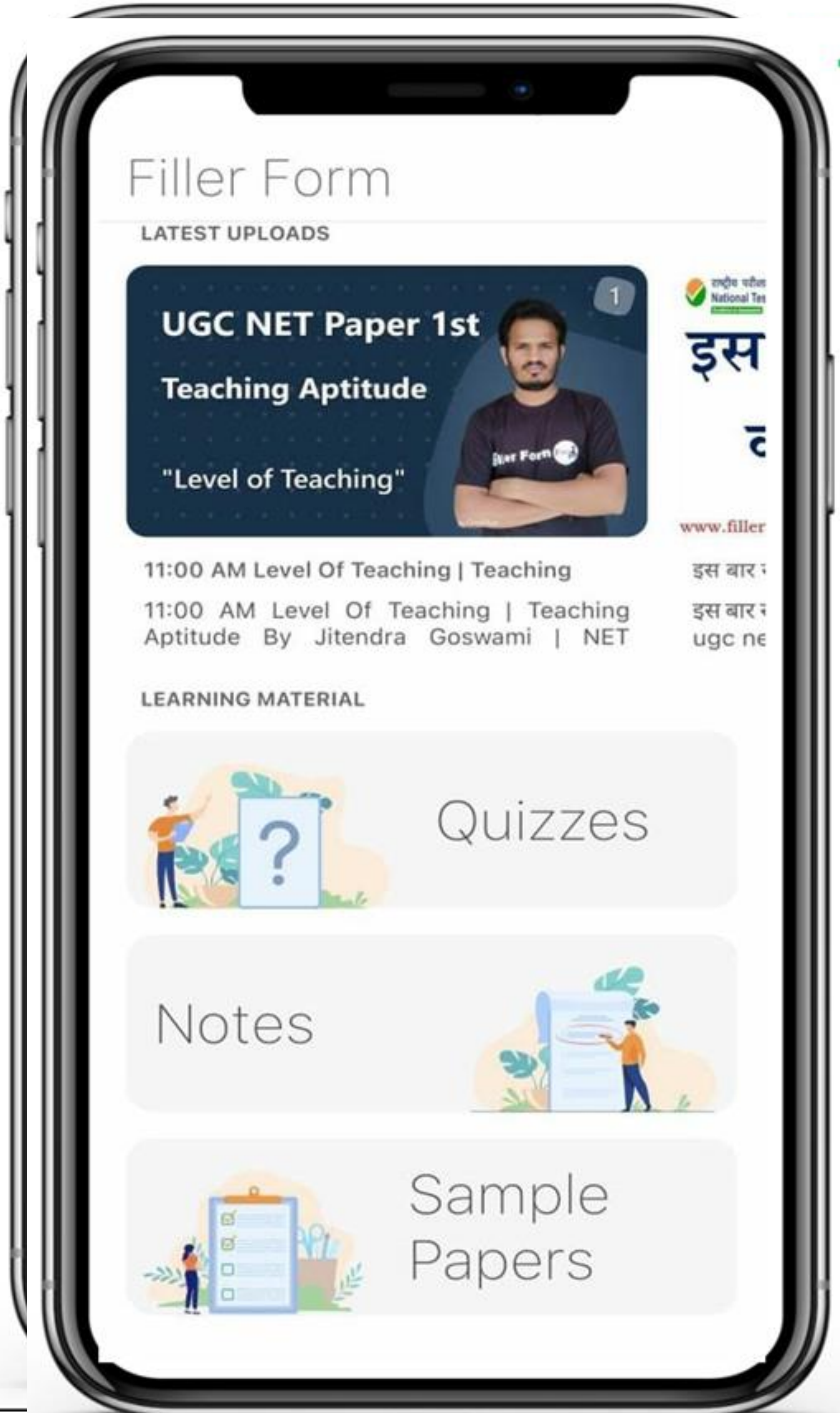

UGC NET 100% Off Free Class

- Free Notes
- Live Class
- 5000+MCQ+PYQ
- Free Books

100% OFF

fillerform

NET Free Class

09:00 AM- GK Class

11:00 AM- Paper 1st

12:00 PM - Hindi 2nd

01:00 PM- History 2nd

02:00 PM- Paper 1st MCQ

03:00 PM- Commerce 2nd

06:00 PM- Sanskrit 2nd

08:00 PM - Computer 2nd

09:00 PM- Paper 1st DI

Fillerform

8233651148

How To download Notes

www.ugc-net.com

UGC NET PAPER = SANSKRIT...

🎯JRF का जलवा 🔥 🏆

27 th march 2022

Google Meet

Time = 6 pm

NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A., now Ph.d running

Quiz Start

UGC NET

Paper 1st & 2nd

Coming Soon

Home work Answer.....

26. पूर्वमीमांसादर्शने कति अध्यायाः सन्ति -

(A) 5 (B) 12

(C) 20 (D) 16

27. 'अथातो धर्मजिज्ञासा' इति जैमिनीयसूत्रे वेदाध्ययनस्य दृष्टार्थत्वं को ब्रूते ?

(A) 'अथ' शब्दः (B) 'अतः' शब्दः

(C) 'धर्म' शब्दः (D) 'जिज्ञासा' शब्दः

Today's Topic...

योग दर्शन

8209837844

www.ugc-net.com

॥योग दर्शन॥

ग्रन्थ लेखक – पतंजलि, **योगसूत्र में पाद**- 4

1. समाधि 2. साधन 3. विभूति 4. कैवल्य

योग दर्शन-

योगदर्शन छः आस्तिक दर्शनों (षड्दर्शन) में से एक है। इसके प्रणेता पतञ्जलि मुनि हैं। यह दर्शन सांख्य दर्शन के 'पूरक दर्शन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस दर्शन का प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को वह मार्ग दिखाना है जिस पर चलकर वह जीवन के परम लक्ष्य (मोक्ष) की प्राप्ति कर सके। अन्य दर्शनों की भांति योगदर्शन तत्त्वमीमांसा के प्रश्नों (जगत् क्या है, जीव क्या है?, आदि) में न उलझकर मुख्यतः मोक्षप्राप्ति के उपाय बताने वाले दर्शन की प्रस्तुति करता है। किन्तु मोक्ष पर चर्चा करने वाले प्रत्येक दर्शन की कोई न कोई तात्विक पृष्ठभूमि होनी आवश्यक है। अतः इस हेतु योगदर्शन, सांख्यदर्शन का सहारा लेता है और उसके द्वारा प्रतिपादित तत्त्वमीमांसा को स्वीकार कर लेता है। इसलिये प्रारम्भ से ही योगदर्शन, **सांख्यदर्शन** से जुड़ा हुआ है। योगसूत्रों की सर्वोत्तम व्याख्या **व्यास मुनि**

द्वारा लिखित **व्यासभाष्य** में प्राप्त होती है। इसमें बताया गया है कि किस प्रकार मनुष्य अपने मन (चित्त) की वृत्तियों पर नियन्त्रण रखकर जीवन में सफल हो सकता है और अपने अन्तिम लक्ष्य निर्वाण को प्राप्त कर सकता है। योगदर्शन, सांख्य की तरह द्वैतवादी है। सांख्य के तत्त्वमीमांसा को पूर्ण रूप से स्वीकारते हुए उसमें केवल 'ईश्वर' को जोड़ देता है। इसलिये योगदर्शन को 'सेश्वर सांख्य' (स + ईश्वर सांख्य) कहते हैं और सांख्य को 'निरीश्वर सांख्य' कहा जाता है।

8209837844 www.ugc-net.com

परिचय-

योगदर्शन में पुरुष तत्त्व केद्रीय विषय के रूप में प्रस्तुत हुआ है। यद्यपि पुरुष और प्रकृति दोनों की स्वतंत्र सत्ता मानी गयी है परन्तु तात्त्विक रूप में पुरुष की सत्ता ही सर्वोच्च है। पुरुष के दो भेद कहे गये हैं । पुरुष को चैतन्य एवं अपरिणामी कहा गया है, किन्तु अविद्या के कारण पुरुष जड़ एवं परिणाम चित्त में स्वयं को आरोपित कर लेता है। पुरुष और चित्त के संयुक्त हो जाने पर विवेक जाता रहता है और पुरुष स्वयं को चित्त रूप में अनुभव करने लगता है। यह अज्ञान ही पुरुष के समस्त दुःखों, क्लेशों का कारण हैं। योग दर्शन का उद्देश्य पुरुष को इस दुःख से, अज्ञान से, मुक्त कराना है। इसी तथ्य को सैद्धान्तिक रूप से योग दर्शन में हेय, हेय-हेतु, हान और हानोपाय के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इन चार क्रमों में पुरुष दुःखों से मुक्ति पाता है, इसलिये योग में इसे

8209837844 www.ugc-net.com

'चतुर्व्यूहवाद' कहा गया है एवं इस चतुर्व्यूह से मुक्त होना ही योग का परम उद्देश्य है। **चतुर्व्यूहवाद** की विवेचना में ही योग दर्शन में पुरूष, पुरूषार्थ और पुरूषार्थ शून्यता का दर्शन प्रकट होता है। पुरुष अविद्याग्रस्त होने पर संसार-चक्र में पड़ता है और पुरूषार्थशून्यता की अवस्था को प्राप्त करता है। पुरुष का परम लक्ष्य कैवल्य की प्राप्ति है। योग में पुरुष को आत्मा का पर्याय माना गया है। अतः आत्मा, जो कि **संख्या** में **असंख्य** है, उसकी कैवल्य प्राप्ति तभी हो सकती है जब चतुर्व्यूह का पुरूषार्थ साधन कर दुःख के त्रिविध रूपों का समाधान कर लिया जाय। दुःख के तीन रूप है - **आध्यात्मिक, आधिभौतिक** और **आधिदैविक।** पुरूषार्थ शून्यता इन त्रितापों से ऊपर की अवस्था है। पुरूषार्थ शून्यता के पश्चात् ही पुरुष की अपने स्वरूप की स्थिति होती है। योगदर्शन में इसे ही कैवल्य अथवा मोक्ष कहा गया है।

8209837844
www.ugc-net.com

Next class....

॥योगाङ्ग॥

Home work Question....

1. योगदर्शनस्य प्रवर्तकोऽस्ति-

(A) पाणिनि (B) पतञ्जलि

(C) कपिल (D) कणाद

2. योगसूत्रस्य कर्ता अस्ति-

(A) कपिल (B) गौतम

(C) पतञ्जलि (D) जैमिनि

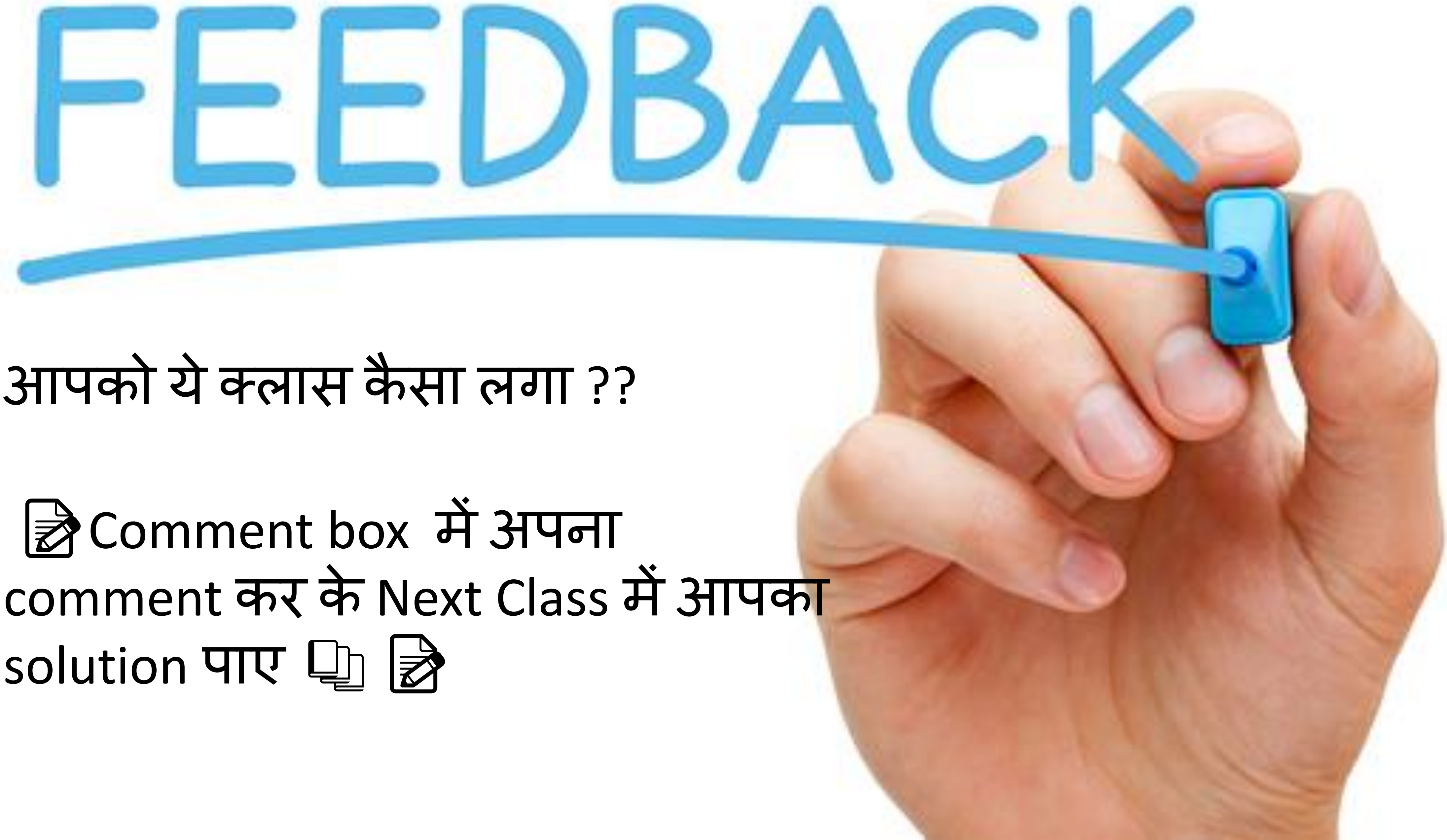

✴ आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information....

www.ugc-net.com

/Fillerform

/Fillerform

/Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

8209837844

www.ugc-net.com

THANK YOU